لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ

ज़ुल्म हुआ हो	जो-जिस	मगर	बात	बुरी	ज़ाहिर करना	अल्लाह	पसन्द नहीं करता

وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا

या माफ़ कर दो	या उसे छुपाओ	कोई भलाई	अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो	148	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	और है

عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ

इन्कार करते हैं	जो लोग	बेशक	149	क़ुदरत वाला	माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	तो बेशक	बुराई	से

بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

और उस के रसूल	अल्लाह	दरमियान	फ़र्क़ निकालें	कि	और चाहते हैं	और उस के रसूलों	अल्लाह का

وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ

कि	और वह चाहते हैं	बाज़ को	और नहीं मानते	बाज़ को	हम मानते हैं	और कहते हैं

يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۙ﴿١٥٠﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ

अस्ल	काफ़िर (जमा)	वह	यही लोग	150	एक राह	उस के दरमियान	पकड़ें (निकालें)

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	और जो लोग ईमान लाए	151	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया है

وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

उन के अजर	उन्हें देगा	अ़नक़रीब	यही लोग	उन में से	किसी के	और फ़र्क़ नहीं करते दरमियान	और उस के रसूलों पर

ع ٢١ ١١ ١ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ ع يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ

उतार लाए	कि	अहले किताब	आप (स) से सवाल करते हैं	152	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ

उस से	बड़ा	मूसा (अ)	सो वह सवाल कर चुके हैं	आस्मान	से	किताब	उन पर

فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ

फिर	उन के ज़ुल्म के बाइस	बिजली	सो उन्हें आ पकड़ा	अ़लानिया	अल्लाह	हमें दिखा दे	उन्हों ने कहा

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا

सो हम ने दरगुज़र किया	निशानियां	उन के पास आईं	कि	उस के बाद	बछड़ा (गौशाला)	उन्हों ने बना लिया

عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ

उन के ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	153	ज़ाहिर (सरीह)	ग़लबा	मूसा (अ)	और हम ने दिया	उस से (उस को)

الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا

और हम ने कहा	सिज्दा करते	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो	उन के लिए (उन से)	और हम ने कहा	उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से	तूर

لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

154	मज़बूत	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	हफ़्ते का दिन	में	न ज़ियादती करो	उन से

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर ज़ुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, क़ुदरत वाला है। (149)

बेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फ़र्क़ निकालें, और कहते हैं कि हम बाज़ को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़्र और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग अस्ल काफ़िर हैं, और हम ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते यही वह लोग हैं अ़नक़रीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्हों ने कहा हमें अल्लाह को अ़लानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के ज़ुल्म के बाइस, फ़िर उन्हों ने बछड़े (गौशाला) को (माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियां आगईं, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया "तूर" पहाड़ उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अ़हद लिया। (154)

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ

नबियों (जमा)	और उन का क़त्ल करना	अल्लाह की आयात	और उन का इन्कार करना	अपना अ़हद ओ पैमान	उन का तोड़ना	बसबब

بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ

उन के कुफ़्र के सबब	उन पर	मोहर कर दी अल्लाह ने	बल्कि	पर्दे में	हमारे दिल (जमा)	और उन का कहना	नाहक़

فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ

मरयम (अ)	पर	और उन का कहना (बान्धना)	और उन के कुफ़्र के सबब	155	कम	मगर	सो वह ईमान नहीं लाते

بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ

रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	मसीह (अ)	हम ने क़त्ल किया	हम	और उन का कहना	156	बड़ा	बुहतान

اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं	और बेशक	उन के लिए	सूरत बना दी गई	और बल्कि	और नहीं सूली दी उस को	और नहीं क़त्ल किया उस को	अल्लाह

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ

पैरवी	मगर	कोई इल्म	उस का	नहीं उन को	उस से	अलबत्ता शक में	उस में

الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۢ ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا

ग़ालिब	अल्लाह	और है	अपनी तरफ़	अल्लाह	उस को उठा लिया	बल्कि	157	यक़ीनन	और उस को क़त्ल नहीं किया	अटकल

حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ

अपनी मौत	पहले	उस पर	ज़रूर ईमान लाएगा	मगर	अहले किताब	से	और नहीं	158	हिक्मत वाला

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا

जो यहूदी हुए (यहूदी)	से	सो ज़ुल्म के सबब	159	गवाह	उन पर	होगा	और क़ियामत के दिन

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और उन के रोकने की वजह से	उन के लिए	हलाल थी	पाक चीज़ें	उन पर	हम ने हराम कर दिया

كَثِيْرًا ﴿۱۶۰﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ

लोग	माल (जमा)	और उन का खाना	उस से	हालांकि वह रोक दिए गए थे	सूद	और उन का लेना	160	बहुत

بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾ لٰكِنِ

लेकिन	161	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन में से	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया	नाहक़

الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	जो	वह मानते हैं	और मोमिनीन	उन में से	इल्म में	पुख़्ता (जमा)

وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करने वाले	नमाज़	और क़ाइम रखने वाले	आप (स) से पहले	से	नाज़िल किया गया	और जो

وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ ع ۲۲ ۱۰ ۲

162	बड़ा	अजर	हम ज़रूर देंगे उन्हें	यही लोग	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान लाने वाले

(उन को सज़ा मिली) बसबब उन के अ़हद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबब) कि हमारे दिल पर्दे में (महफ़ूज़) हैं, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़्र के सबब मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़्र और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबब। (156)

और उन के यह कहने (के सबब) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्हों ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्हों ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूरत बना दी गई और बेशक जो लोग उस (बारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस बारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्हों ने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158)

और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ें जो उन के लिए हलाल थीं हराम कर दीं उन के ज़ुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160)

और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक़, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (161)

लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता हैं, और जो मोमिन हैं वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज़ क़ाइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنۢ بَعْدِهٖ ۚ

उस के बाद	और नबियों	नूह (अ)	तरफ़	हम ने वहि भेजी	जैसे	आप (स) की तरफ़	हम ने वहि भेजी	बेशक हम

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ

और याक़ूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी

وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسٰى وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهٰرُونَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ

और सुलैमान (अ)	और हारून (अ)	और यूनुस (अ)	और अय्यूब (अ)	और ईसा (अ)	और औलादे याक़ूब

وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ

आप (स) पर (आप से)	हम ने उन का अहवाल सुनाया	और ऐसे रसूल (जमा)	163	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी

مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوسٰى

मूसा (अ)	अल्लाह	और कलाम किया	आप पर (आप को)	हम ने हाल बयान किया	नहीं	और ऐसे रसूल	इस से क़ब्ल

تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	ताकि न रहे	और डराने वाले	ख़ुशख़बरी सुनाने वाले	रसूल (जमा)	164	कलाम करना (ख़ूब)

عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

165	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	रसूलों के बाद	हुज्जत	अल्लाह	पर

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	अपने इल्म के साथ	वह नाज़िल किया	आप (स) की तरफ़	उस ने नाज़िल किया	उस पर जो	गवाही देता है	अल्लाह	लैकिन

يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	बेशक	166	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	गवाही देते हैं

وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ

बेशक	167	दूर	गुमराही	तहक़ीक़ वह गुमराही में पड़े	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका

الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ

उन्हें हिदायत दे	और न	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	और ज़ुल्म किया	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो

طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ

यह	और है	हमेशा	उस में	रहेंगे	जहन्नम	रास्ता	मगर	168	रास्ता (सीधा)

عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	रसूल	तुम्हारे पास आया	लोग	ऐ	169	आसान	अल्लाह पर

مِنْ رَّبِّكُمْ فَـَٔامِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا

जो	अल्लाह के लिए	तो बेशक	तुम न मानोगे	और अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	सो ईमान लाओ	तुम्हारा रब	से

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

170	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों में

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नबियों की तरफ़ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याक़ूब (अ) और औलादे याक़ूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनुस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से क़ब्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (ख़ूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफ़ी है। (166)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहक़ीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो बेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

ऐ अहले किताब	गुलू न करो	अपने दीन में	और न कहो	पर (बारे में) अल्लाह

اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ

सिवाए	हक़	इस के सिवा नहीं	मसीह	ईसा	इब्ने मरयम (अ)	रसूल	अल्लाह	और उस का कलिमा

اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا

उस को डाला	तरफ़	मरयम (अ)	और रूह	उस से	सो ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उस के रसूल	और न

تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ

कहो	तीन	बाज़ रहो	बेहतर	तुम्हारे लिए	इसके सिवा नहीं	अल्लाह	माबूदे वाहिद

سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا وقف لازم

वह पाक है	कि	हो	उस की	औलाद	उस का	जो	आस्मानों में	और जो

فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ ع ٢٣ ٩ ٣

ज़मीन में	और काफ़ी है	अल्लाह	कारसाज़	171	हरगिज़ आर नहीं	मसीह (अ)	कि

يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ

हो	बन्दा	अल्लाह का	और न	फ़रिश्ते	मुक़र्रब (जमा)	और जो	आर करे

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾ فَاَمَّا

से	उस की इबादत	और तकब्बुर करे	तो अ़नक़रीब उन्हें जमा करेगा	अपने पास	सब	172	फिर जो

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ

लोग	ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए	नेक	उन्हें पूरा देगा	उन के अजर

وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا

और उन्हें ज़ियादा देगा	से	अपना फ़ज़्ल	और फिर	वह लोग जो	उन्हों ने आर समझा	और उन्हों ने तकब्बुर किया

فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

तो उन्हें अ़ज़ाब देगा	अ़ज़ाब	दर्दनाक	और वह न पाएंगे	अपने लिए	से (के)	अल्लाह के सिवा

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ

दोस्त	और न	मददगार	173	ऐ लोगो!	तुम्हारे पास आ चुकी	रौशन दलील

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

से	तुम्हारा रब	और हम ने नाज़िल किया	तुम्हारी तरफ़	रौशनी	वाज़ेह	174	पस	जो लोग ईमान लाए

بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ

अल्लाह पर	और मज़बूत पकड़ा	उस को	वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा	रहमत में

مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾

उस से (अपनी)	और फ़ज़्ल	और उन्हें हिदायत देगा	अपनी तरफ़	रास्ता	सीधा	175

ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ़ डाला और उस (की तरफ़) से आत्मा हैं, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (ख़ुदा) तीन हैं, (उस से) बाज़ रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (बेशक) कि अल्लाह माबूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफ़ी है। **(171)**

मसीह (अ) को हरगिज़ आ़र (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुक़र्रिब फ़रिश्तों को (आ़र है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आ़र और तकब्बुर करे तो वह अ़नक़रीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। **(172)**

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए वह उन्हें उन के अजर पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़्ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आ़र समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अ़ज़ाब देगा, दर्दनाक अ़ज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मददगार। **(173)**

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है वाज़ेह रौशनी। **(174)**

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्हों ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़्ल में, और उन्हें अपनी तरफ़ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। **(175)**

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ

मर जाए	कोई मर्द	अगर	कलाला (के बारे) में	तुम्हें हुक्म बताता है	अल्लाह	कह दें	आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं

لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

उस का वारिस होगा	और वह	जो उस ने छोड़ा (तर्का)	निस्फ़ (1/2)	तो उस के लिए	एक बहन	और उस की हो	उस की कोई औलाद	न हो

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا

उस से जो	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो बहनें	हों	फिर अगर	कोई औलाद	उस की	न हो	अगर

تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

हिस्सा	बराबर	तो मर्द के लिए	और कुछ औरतें	कुछ मर्द	भाई बहन	हों	और अगर	उस ने छोड़ा (तर्का)

ع ٢٤ ٥ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ع ﴿۱۷۶﴾

176	जानने वाला	चीज़	हर	और अल्लाह	ताकि भटक न जाओ	तुम्हारे लिए	अल्लाह	खोल कर बयान करता है	दो औरत

آيَاتُهَا ۱۲۰ ❀ سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ (۵) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ۱۶

आयात 120 — (5) सूरतुल माइदा ख़ान — रुकूआत 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

المنزل الثاني ٢ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ

चौपाए	हलाल किए गए तुम्हारे लिए	अ़हद-क़ौल	पूरा करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	एहराम में हो	जब कि तुम	हलाल जाने हुए शिकार	मगर	पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें	जो	सिवाए	मवेशी

يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا

और न	अल्लाह की निशानियां	हलाल न समझो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	1	जो चाहे	हुक्म करता है

الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْىَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ

एहतराम वाला घर (ख़ाने कअ़बा)	क़स्द करने वाले (आने वाले)	और न	गले में पट्टा डाले हुए	और न	नियाज़े कअ़बा	और न	महीने अदब वाले

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ

तो शिकार कर लो	एहराम खोल दो	और जब	और ख़ुशनूदी	अपने रब से	फ़ज़्ल	वह चाहते हैं

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

मस्जिद हराम (ख़ाने कअ़बा)	से	तुम को रोकती थी	जो	क़ौम	दुश्मनी	तुम्हारे लिए बाइस हो	और न

وقف لازم اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ

गुनाह	पर (में)	और एक दूसरे की मदद न करो	और तक़्वा (परहेज़गारी)	नेकी पर (में)	और एक दूसरे की मदद करो	कि तुम ज़ियादती करो

الربع وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲﴾

2	अ़ज़ाब	सख़्त	बेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से	और ज़ियादती (सरकशी)

आप (स) से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निस्फ़ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। **(176)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! अपने अ़हद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, बेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। **(1)**

ऐ ईमान वालो! शआ़एर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (ज़ुलक़अ़दह, ज़ुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाज़े कअ़बा (के जानवर) और न गले में (क़ुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले ख़ाने कअ़बा को जो अपने रब का फ़ज़्ल और ख़ुशनूदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) क़ौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) से (उस का) बाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। **(2)**

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ

पुकारा गया	और जो-जिस	और सुव्वर का गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम कर दिया गया

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَآ

और जो-जिस	और सींग मारा हुआ	और गिर कर मरा हुआ	और चोट खाकर मरा हुआ	और गला घोंटने से मरा हुआ	उस पर	अल्लाह के सिवा

اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۗ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا

तुम तक़्सीम करो	और यह कि	थानों पर	ज़ुबह किया गया	और जो	तुम ने ज़ुबह कर लिया	मगर जो	दरिन्दा	खाया

بِالْاَزْلَامِ ۭ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ۭ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

तुम्हारे दीन से	जिन लोगो ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	मायूस हो गए	आज	गुनाह	यह	तीरों से

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۭ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ

और पूरी कर दी	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	मैं ने मुकम्मल कर दिया	आज	और मुझ से डरो	सो तुम उन से न डरो

عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۭ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ

में	लाचार हो जाए	फिर जो	दीन	इस्लाम	तुम्हारे लिए	और मैं ने पसन्द किया	अपनी नेमत	तुम पर

مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣ يَسْـَٔلُوْنَكَ

आप (स) से पूछते हैं	3	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	गुनाह की तरफ़	माइल हो	न	भूक

مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ

शिकारी जानवर	से	तुम सुधाओ	और जो	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं	कह दें	उन के लिए	हलाल किया गया	क्या

مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ

तुम्हारे लिए	वह पकड़ रखें	उस से जो	पस तुम खाओ	अल्लाह	तुम्हें सिखाया	उस से जो	तुम उन्हें सिखाते हो	शिकार पर दौड़ाए हुए

وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

4	तेज़ हिसाब लेने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरो	उस पर	अल्लाह	नाम	और याद करो (लो)

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ

हलाल	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	और खाना	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं	आज

لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ

और पाक दामन	मोमिन औरतें	से	और पाक दामन औरतें	उन के लिए	हलाल	और तुम्हारा खाना	तुम्हारे लिए

مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जो	से

مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ

मुन्किर हुआ	और जो	छुपी आश्नाई	और न बनाने को	न कि मस्ती निकालने को	क़ैद में लाने को

بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥ ع ١ ٥

5	नुक़्सान उठाने वाले	से	आख़िरत में	और वह	उस का अमल	तो ज़ाया हुआ	ईमान से

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोंटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने ज़ुबह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परस्तिश गाहों) पर ज़ुबह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तक़्सीम करो, यह गुनाह हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ़ (उस के लिए गुंजाइश है) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह कर लो) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गईं, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल हैं), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (क़ैद निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आश्नाई करने को, और जो ईमान का मुन्किर हुआ उस का अमल ज़ाया हुआ, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से है। (5)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا

तो धोलो	नमाज़ के लिए	तुम उठो	जब	वह जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और अपने पाऊँ	अपने सरों का	और मसह करो	कुहनियां	तक	और अपने हाथ	अपने मुँह

اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	और अगर	तो खूब पाक हो जाओ	नापाक	तुम हो	और अगर	टख़नों	तक

مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ

बैतुलख़ला से	तुम में से	कोई	आए	और	सफ़र	पर (में)	या	बीमार

اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۗءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا

मिट्टी	तो तयम्मुम कर लो	पानी	फ़िर न पाओ	औरतों से	या तुम मिलो (सुहबत की)

طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۭ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

अल्लाह	नहीं चाहता	उस से	और अपने हाथ	अपने मुँह	तो मसह करो	पाक

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

कि तुम्हें पाक करे	चाहता है	और लेकिन	तंगी	कोई	तुम पर	कि करे

وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ٦ وَاذْكُرُوْا

और याद करो	6	एहसान मानो	ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	और यह कि पूरी करे

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ

उस से	तुम ने बान्धा	जो	और उस का अ़हद	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह की नेमत

اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

बात	जानने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	और हम ने माना	हम ने सुना	जब तुम ने कहा

الصُّدُوْرِ ٧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	खड़े होने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	7	दिलों की

شُهَدَاۗءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى

पर	किसी क़ौम	दुशमनी	और तुम्हें न उभारे	इन्साफ़ के साथ	गवाह

اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا

और डरो	तक़वा के	ज़ियादा क़रीब	वह (यह)	तुम इन्साफ़ करो	कि इन्साफ़ न करो

اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ٨ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	अल्लाह	वादा किया	8	जो तुम करते हो	खूब बाख़बर	बेशक अल्लाह	अल्लाह

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ٩

9	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टख़नों तक, और अगर तुम नापाक हो (ग़ुस्ल की हाजत हो) तो खूब पाक हो जाओ (ग़ुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई बैतुलख़ला से आए या तुम ने औ़रतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अ़हद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़वा के ज़ियादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٠﴾

10	जहन्नम वाले	यही	हमारी आयतें	और झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अपने ऊपर	अल्लाह	नेमत	तुम याद करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ

पस रोक दिए	अपने हाथ	तुम्हारी तरफ़	बढ़ाएं	कि	एक गिरोह	जब इरादा किया

اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

चाहिए भरोसा करें	अल्लाह	और पर	अल्लाह	और डरो	तुम से	उन के हाथ

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ

ع ٢ ٦

बनी इस्राईल	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और अलबत्ता	11	ईमान वाले

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۭ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّىْ مَعَكُمْ ۭ

बेशक मैं तुम्हारे साथ	अल्लाह	और कहा	सरदार	बारह (12)	उन से	और हम ने मुक़र्रर किए

لَىِٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ

और ईमान लाओगे	ज़कात	और देते रहोगे	नमाज़	क़ाइम रखोगे	अगर

بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا

हसना	क़र्ज़	अल्लाह	और क़र्ज़ दोगे	और उन की मदद करोगे	मेरे रसूलों पर

لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	बाग़ात	और ज़रूर दाख़िल कर दूँगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	तुम से	मैं ज़रूर दूर करदूँगा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ

तुम में से	उस के बाद	कुफ़्र किया	फिर जो-जिस	नहरें	उन के नीचे	से

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ

उन का अ़हद	उनका तोड़ना	सो बसबब (पर)	12	रास्ता	सीधा	बेशक गुमराह हुआ

لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ

से	कलाम	वह फेर देते हैं	सख़्त	उन के दिल (जमा)	और हम ने कर दिया	हम ने उन पर लानत की

مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ

और हमेशा	उन्हें जिस की नसीहत की गई	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	और वह भूल गए	उस के मवाक़े

تَطَّلِعُ عَلٰى خَاۗئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ

उन से	थोड़े	सिवाए	उन से	ख़ियानत	पर	आप ख़बर पाते रहते हैं

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾

13	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	और दरगुज़र कर	उन को	सो माफ़ कर

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्रर किए बारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़्र किया बेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उनकी ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ करदें और दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ

उन का अ़हद	हम ने लिया	नसारा	हम	जिन लोगो ने कहा	और से

فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ

उन के दरमियान	तो हम ने लगा दी	जिस की नसीहत की गई थी	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	फिर वह भूल गए

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَسَوْفَ

और जल्द	रोज़े क़ियामत	तक	और बुग़ज़	अ़दावत

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

ऐ अहले किताब	14	करते थे	जो वह	अल्लाह	उन्हें जता देगा

قَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا

बहुत सी बातें जो	तुम्हारे लिए	वह ज़ाहिर करते हैं	हमारे रसूल	यक़ीनन तुम्हारे पास आगए

كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۭ

बहुत उमूर से	और वह दरगुज़र करता है	किताब से	छुपाते	तुम थे

قَدْ جَاۗءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

15	रौशन	और किताब	नूर	अल्लाह से	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ

सलामती	राहें	उस की रज़ा	जो तावे हुआ	अल्लाह	उस से	हिदायत देता है

وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

अपने हुक्म से	नूर की तरफ़	अन्धेरे	से	और वह उन्हें निकालता है

وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए	16	सीधा	रास्ता	तरफ़	और उन्हें हिदायत देता है

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ

इब्ने मरयम	वही मसीह (अ)	बेशक अल्लाह	जिन लोगो ने कहा

قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ

हलाक कर दे	अगर वह चाहे कि	कुछ भी	अल्लाह के आगे	बस चलता है	तो किस	कह दीजिए

الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ

सब	ज़मीन	में	और जो	और उस की माँ	इब्ने मरयम	मसीह (अ)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ

वह पैदा करता है	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए सल्तनत

مَا يَشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

17	क़ादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जो वह चाहता है

और उन लोगों से जिन्हों ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अ़हद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े क़ियामत तक अ़दावत और बुग़ज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। (14)

ऐ अहले किताब! यक़ीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ़ से नूर और रौशन किताब। (15)

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के तावे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से नूर की तरफ़ अपने हुक्म से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। (16)

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए वह जिन लोगों ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिए: तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (17)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۭ قُلْ فَلِمَ

फिर क्यों	कह दीजिए	और उस के प्यारे	अल्लाह	बेटे	हम	और नसारा	यहूद	और कहा

يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ

वह चाहता है	जिस को	वह बख़्श देता है	उस ने पैदा किया (मख़लूक़)	उन में से	बशर	तुम	बल्कि	तुम्हारे गुनाहों पर	तुम्हें अ़ज़ाब देता है

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

और जो	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत	और अल्लाह के लिए	जिस को वह चाहता है	और अ़ज़ाब देता है

بَيْنَهُمَا ۡ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ١٨ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلُنَا

हमारे रसूल	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आए	ऐ अहले किताब	18	लौट कर जाना है	और उसी की तरफ़	उन दोनों के दरमियान

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰي فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَاۗءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ

ख़ुशख़बरी देने वाला	कोई	हमारे पास नहीं आया	तुम कहो	कि कहीं	रसूल (जमा)	से (के)	सिलसिला टूट जाना	पर (बाद)	तुम्हारे लिए	वह खोल कर बयान करते हैं

وَّلَا نَذِيْرٍ ۡ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	और अल्लाह	और डराने वाले	ख़ुशख़बरी सुनाने वाले	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगए	डराने वाला	और न

قَدِيْرٌ ١٩ ع وَاِذْ قَالَ مُوْسٰي لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ ٣ ٨ ٧

अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम को	मूसा	कहा	और जब	19	क़ादिर

عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَاۗءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۡ وَّاٰتٰىكُمْ

और तुम्हें दिया	बादशाह	और तुम्हें बनाया	नबी (जमा)	तुम में	उस ने बनाया	जब	अपने ऊपर

مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ٢٠ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا

दाख़िल हो जाओ	ऐ मेरी क़ौम	20	जहानों में	से	किसी को	दिया	जो नहीं

الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ

अपनी पीठ	पर	लौटो	और न	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने लिख दी	जो	अर्ज़े मुक़द्दस (उस पाक सर ज़मीन)

فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ٢١ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۚ

ज़बरदस्त	एक क़ौम	बेशक उस में	ऐ मूसा (अ)	उन्हों ने कहा	21	नुक़्सान में	वरना तुम जा पड़ोगे

وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا

उस से	वह निकले	फिर अगर	उस से	वह निकल जाएं	यहां तक कि	हरगिज़ दाख़िल न होंगे	और हम बेशक

فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ٢٢ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ

अल्लाह ने इन्आ़म किया था	डरने वाले	उन लोगों से जो	दो आदमी	कहा	22	दाख़िल होंगे	तो हम ज़रूर

عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ

तो तुम	तुम दाख़िल होगे उस में	पस जब	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो उन पर (हमला कर दो)	उन दोनो पर

غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٢٣

23	ईमान वाले	अगर तुम हो	भरोसा रखो	और अल्लाह पर	ग़ालिब आओगे

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मख़लूक़ में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अ़ज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आ गए वह नबियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहक़ीक़ तुम्हारे पास (मुहम्मद (स) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को कहाः ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी क़ौम! अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक़्सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक ज़बरदस्त क़ौम है, और हम वहां हरगिज़ दाख़िल न होंगे यहां तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम ज़रूर उस में दाख़िल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इन्आ़म किया थाः कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाख़िल हो जाओ, जब तुम उस में दाख़िल होगे तो तुम ही ग़ालिब होगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ

सो जा	उस में	जब तक वह हैं	कभी भी	हरगिज़ वहां दाख़िल न होंगे	बेशक हम	ऐ मूसा	उन्हों ने कहा

اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ

मैं बेशक	ऐ मेरे रब	मूसा (अ) ने कहा	24	बैठे हैं	यहीं	हम	तुम दोनों लड़ो	और तेरा रब	तू

لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِىْ وَاَخِىْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ

क़ौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	पस जुदाई कर दे	और अपना भाई	अपनी जान के सिवा	इख़्तियार नहीं रखता

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ

साल	चालीस	उन पर	हराम करदी गई	पस यह	उस ने कहा	25	नाफ़रमान

ع ٤ ٨ يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع

26	नाफ़रमान	क़ौम	पर	तू अफ़सोस न कर	ज़मीन में	भटकते फिरेंगे

وقف لازم

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ

तो क़ुबूल कर ली गई	कुछ नियाज़	जब दोनों ने पेश की	अहवाल-ए-वाक़ई	आदम के दो बेटे	ख़बर	उन्हें	और सुना

مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ

उस ने कहा	मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा	उस ने कहा	दूसरे से	और न क़ुबूल की गई	उन में से एक	से

النصف

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَىِٕنْۢ بَسَطْتَّ اِلَىَّ يَدَكَ

अपना हाथ	मेरी तरफ़	अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा	27	परहेज़गार (जमा)	से	अल्लाह	क़ुबूल करता है	बेशक सिर्फ़

لِتَقْتُلَنِىْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِىَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ

डरता हूँ	बेशक मैं	कि तुझे क़त्ल करूँ	तेरी तरफ़	अपना हाथ	बढ़ाने वाला	मैं नहीं	कि मुझे क़त्ल करे

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِىْ

मेरे गुनाह	कि तू हासिल करे	चाहता हूँ	बेशक मैं	28	परवरदिगार सारे जहान का	अल्लाह

وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع

29	ज़ालिम (जमा)	सज़ा	और यह	जहन्नम वाले	से	फिर तू हो जाए	और अपने गुनाह

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	नुक़्सान उठाने वाले	से	तो वह हो गया	सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	अपना भाई	क़त्ल	उस का नफ़्स	उस को	फिर राज़ी किया

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِىْ

वह छुपाए	कैसे	ताकि उसे दिखाए	ज़मीन में	कुरेदता था	एक कव्वा	अल्लाह	फिर भेजा

سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا

इस-यह	जैसा	कि मैं हो जाऊँ	मुझ से न हो सका	हाए अफ़सोस मुझ पर	उस ने कहा	अपना भाई	लाश

الْغُرَابِ فَاُوَارِىَ سَوْءَةَ اَخِىْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ع

31	नादिम होने वाले	से	पस वह हो गया	अपना भाई	लाश	फिर छुपाऊँ	कव्वा

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में हैं हम वहां कभी भी हरगिज़ दाख़िल न होंगें, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं इख़्तियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फ़ैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरज़मीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह ज़मीन में भटकते फिरेंगें, तू नाफ़रमान क़ौम पर अफ़सोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़ई सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की क़ुबूल कर ली गई और दूसरे से क़ुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ क़ुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ़ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, बेशक मैं सारे जहान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

बेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहन्नम वालों में से होजाए और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (29)

फिर उस को उस के नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कव्वा ज़मीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफ़सोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कव्वे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमां) होने वालों में से होगया। (31)

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ

कि जो-जिस	बनी इस्राईल	पर	हम ने लिख दिया	उस	वजह	से

مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

उस ने क़त्ल किया	तो गोया	ज़मीन (मुल्क) में	या फ़साद करना	किसी जान के बग़ैर	कोई जान	कोई क़त्ल करे

النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ

तमाम	लोग	उस ने ज़िन्दा रखा	तो गोया	उस को ज़िन्दा रखा	और जो-जिस	तमाम	लोग

وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۫ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

उन में से	अक्सर	बेशक	फिर	रौशन दलाइल के साथ	हमारे रसूल	और उन के पास आ चुके

بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ

जंग करते हैं	जो लोग	सज़ा	यही	32	हद से बढ़ने वाले	ज़मीन (मुल्क) में	उस के बाद

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا

कि वह क़त्ल किए जाएं	फ़साद करने	जमीन (मुल्क) में	और कोशिश करते हैं	और उस का रसूल (स)	अल्लाह

اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ

एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से	से	और उन के पाऊँ	उन के हाथ	काटे जाएं	या	वह सूली दिए जाएं	या

اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى الدُّنْيَا

दुनिया में	रुसवाई	उन के लिए	यह	मुल्क से	या मुल्क बदर कर दिए जाएं

وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

वह लोग जिन्हों ने तौबा कर ली	मगर	33	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	तो जान लो	उन पर	तुम क़ाबू पाओ	कि	उस से पहले

رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا ع ٨ ٩

और तलाश करो	अल्लाह	डरो	जो लोग ईमान लाए	ऐ	34	मेहरबान

اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	उस का रास्ता	में	और जिहाद करो	क़ुर्ब	उस की तरफ़

تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا

जो	उन के लिए	यह कि	अगर	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बेशक	35	फ़लाह पाओ

فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ

अज़ाब	से	उस के साथ	कि फ़िदया (बदले में) दें	उस के साथ	और इतना	सब का सब	ज़मीन में

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

36	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन से	क़ुबूल किया जाएगा	न	क़ियामत का दिन

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बग़ैर या मुल्क में फ़साद करने के बग़ैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। (32)

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सअ़ई करते हैं मुल्क में फ़साद बर्पा करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिब से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (33)

मगर वह लोग जिन्हों ने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम क़ाबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (34)

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) क़ुर्ब तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (35)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से क़ुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (36)

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ

निकलने वाले	हालांकि नहीं वह	आग	से	वह निकल जाएं	कि	वह चाहेंगे

مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا

काट दो	और चोर औ़रत	और चोर मर्द	37	हमेशा रहने वाला	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उस से

اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	अल्लाह	से	इब्रत	उस की जो उन्हों ने किया	सज़ा	उन दोनों के हाथ

حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और इस्लाह की	अपना जु़ल्म	बाद	से	पस जो-जिस तौबा की	38	हिक्मत वाला

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

उसी की	अल्लाह	कि	क्या तू नहीं जानता	39	मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस की तौबा क़ुबूल करता है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ

और बख़्शदे	जिसे चाहे	अ़ज़ाब दे	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ

रसूल (स)	ऐ	40	क़ादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस को चाहे

لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	जो लोग	से	कुफ़्र	में	भाग दौड़ करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन न करें

اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ

वह लोग जो यहूदी हुए	और से	उन के दिल	और मोमिन नहीं	अपने मुँह से (जमा)	हम ईमान लाए

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ

वह आप (स) तक नहीं आए	दूसरी	क़ौम के लिए	वह जासूस हैं	झूट के लिए	जासूसी करते हैं

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ

कहते हैं	उस का ठिकाना	बाद	कलाम	वह फेर देते हैं

اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ

तो उस से बचो	यह तुम्हें न दिया जाए	और अगर	उस को क़ुबूल कर लो	यह	अगर तुम्हें दिया जाए

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	अल्लाह	से	उस के लिए	तू हरगिज़ न आ सकेगा	गुमराह करना	अल्लाह चाहे	और जो-जिस

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ

उन के लिए	उन के दिल	पाक करे	कि	अल्लाह	नहीं चाहा	वह लोग जो	यही लोग

فِى الدُّنْيَا خِزْیٌ ۖۚ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

41	बड़ा	अ़ज़ाब	आख़िरत	में	और उन के लिए	रुसवाई	दुनिया में

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अ़ज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औ़रत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्हों ने किया, इब्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने जु़ल्म के बाद और इस्लाह कर ली तो बेशक अल्लाह उस की तौबा क़ुबूल करता है, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और जिस को चाहे बख़्शदे, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़्र में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते है हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस हैं एक दूसरी जमाअ़त के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को क़ुबूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हाँ कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (41)

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ

तो फ़ैसला कर दें आप (स)	आप (स) के पास आएं	पस अगर	हराम	बड़े खाने वाले	झूट के लिए	जासूसी करने वाले

بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ

आप (स) का बिगाड़ सकेंगे	तो हरगिज़ न	उन से	आप (स) मुँह फेर लें	और अगर	उन से	मुँह फेर लें	या	उन के दरमियान

شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	उन के दरमियान	तो फ़ैसला करें	आप फ़ैसला करें	और अगर	कुछ

الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا

उस में	तौरात	जबकि उन के पास	वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे	और कैसे	42	इन्साफ़ करने वाले

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ

वह लोग	और नहीं	उस	बाद	फिर जाते हैं	फिर	अल्लाह का हुक्म

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ ع ٦ ١٠

और नूर	हिदायत	उस में	तौरात	हम ने नाज़िल की	बेशक हम	43	मानने वाले

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا

उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को)	जो फ़रमांबरदार थे	नबी (जमा)	उस के ज़रीआ	हुक्म देते थे

وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ

अल्लाह की किताब	से (की)	वह निगहबान किए गए	इस लिए कि	और उलमा	अल्लाह वाले (दर्वेश)

وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ

और डरो मुझ से	लोग	पस न डरो	निगरान (मुहाफ़िज़)	उस पर	और थे

وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ

उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला न करे	और जो	थोड़ी	क़ीमत	मेरी आयतों के बदले	और न ख़रीदो (न हासिल करो)

اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ

उन पर	और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया)	44	काफ़िर (जमा)	वह	सो यही लोग	अल्लाह ने नाज़िल किया

فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ

और नाक	आँख के बदले	और आँख	जान के बदले	जान	कि	उस में

بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ

और ज़ख़्मों	दाँत के बदले	और दाँत	कान के बदले	और कान	नाक के बदले

قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ

और जो	उस के लिए	कफ़्फ़ारा	तो वह	उस को	माफ़ कर दिया	फिर जो-जिस	बदला

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	ज़ालिम (जमा)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हराम खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आएं तो आप (स) उन के दरमियान फ़ैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फ़ैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करें, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। **(42)**

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। **(43)**

बेशक हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांबरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहबान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत, और जो उस के मुताबिक़ फैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। **(44)**

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़्फ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। **(45)**

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا

उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	इब्ने मरयम	ईसा (अ)	उन के निशाने क़दम	पर	और हम ने पीछे भेजा

بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ

और नूर	हिदायत	उस में	इंजील	और हम ने उसे दी	तौरात	से	उस से पहले

وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً

और नसीहत	और हिदायत	तौरात	से	उस से पहले	उस की जो	और तस्दीक़ करने वाली

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ

और जो	उस में	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के साथ जो	इंजील वाले	और फ़ैसला करें	46	परहेज़गारों के लिए

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ

और हम ने नाज़िल की	47	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

किताब	से	उस से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाली	सच्चाई के साथ	किताब	आप की तरफ़

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ

और न पैरवी करें	अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	सो फ़ैसला करें	उस पर	और निगहबान ओ मुहाफ़िज़

اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً

दस्तूर	तुम में से	हम ने मुक़र्रर किया है	हर एक के लिए	हक़	से	तुम्हारे पास आगया	उस से	उन की ख़ाहिशात

وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ

ताकि तुम्हें आज़माए	और लेकिन	वाहिदा (एक)	उम्मत	तो तुम्हें कर देता	अल्लाह चाहता	और अगर	और रास्ता

فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

वह तुम्हें बतलादेगा	सब को	तुम्हें लौटना	अल्लाह	तरफ़	नेकियां	पस सबक़त करो	उस ने तुम्हें दिया	जो	में

بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	और फ़ैसला करें	48	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जो

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ

जो	बाज़ (किसी)	से	बहका न दें	कि	और उन से बचते रहो	उन की ख़ाहिशें	और न चलो

اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ

उन्हें पहुँचादे	कि	अल्लाह	चाहता है	सिर्फ़ यही	तो जान लो	वह मुँह फेर लें	फिर अगर	आप की तरफ़	अल्लाह	नाज़िल किया

بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ

क्या हुक्म	49	नाफ़रमान	लोग	से	अक्सर	और बेशक	उन के गुनाह	बसबब बाज़

ع ٧ ١١ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۭ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

50	यक़ीन रखते हैं	लोगो के लिए	हुक्म	अल्लाह	से	बेहतर	और किस	वह चाहते हैं	जाहिलियत

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने क़दम पर भेजा, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उस (ईसा (अ) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तस्दीक़ करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। (46)

और इंजील वाले उस के साथ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं। (47)

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली और उस पर निगहबान ओ मुहाफ़िज़, सो उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुक़र्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मते वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस से आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (48)

और उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन कि ख़ाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें बहका न दें किसी ऐसे (हुक्म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह मुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचाए उन के बाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। (49)

क्या वह (दौरे) जाहिलियत का हुक्म (रस्म ओ रिवाज) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक्म किस का है उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं? (50)

وقف لازم
وقف منزل عند البعض
وقف غفران

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ

दोस्त	और नसारा	यहूद	न बनाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۭ

उन से	तो बेशक वह	तुम में से	उन से दोस्ती रखेगा	और जो	बाज़ (दूसरे)	दोस्त	उन में से बाज़

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ

में	वह लोग जो	पस तू देखेगा	51	ज़ालिम	लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ

कि	हमें डर है	कहते हैं	उन में (उन की तरफ़)	दोड़ते हैं	रोग	उन के दिल

تُصِيْبَنَا دَاۗىِٕرَةٌ ۭ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ

अपने पास	से	या कोई हुक्म	लाए फ़तह	कि	अल्लाह	सो क़रीब है	गर्दिश	हम पर (न) आजाए

فَيُصْبِحُوْا عَلٰي مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُوْلُ

और कहते हैं	52	पछताने वाले	अपने दिल (जमा)	में	वह छुपाते थे	जो	पर	तो रह जाएं

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ

कि वह	अपनी क़स्में	पक्की	अल्लाह की	क़स्में खाते थे	जो लोग	क्या यह वही हैं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)

لَمَعَكُمْ ۭ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	53	नुक़्सान उठाने वाले	पस रह गए	उन के अ़मल	अकारत गए	तुम्हारे साथ

الثالثة

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ

ऐसी क़ौम	लाएगा अल्लाह	तो अ़नक़रीब	अपना दीन	से	तुम से	फिरेगा	जो	जो लोग ईमान लाए (ईमाम वाले)

يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۡ

काफ़िर (जमा)	पर	ज़बरदस्त	मोमिनीन	पर	नर्म दिल	और वह उसे महबूब रखते हैं	वह उन्हें महबूब रखता है

يُّجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۗىِٕمٍ ۭ ذٰلِكَ

यह	कोई मलामत करने वाला	मलामत	और नहीं डरते	अल्लाह	में रास्ता	जिहाद करते हैं

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ

तुम्हारा रफ़ीक	उस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	54	इल्म वाला	वुस्अ़त वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	वह देता है	अल्लाह	फ़ज़्ल

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करते हैं	जो लोग	ओर जो लोग ईमान लाए	और उस का रसूल	अल्लाह

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ

अल्लाह	दोस्त रखते हैं	और जो	55	रुकुअ़ करने वाले	और वह	ज़कात	और देते हैं

ع ٨ ١٢

وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾

56	ग़ालिब (जमा)	वह	अल्लाह की जमाअ़त	तो बेशक	ओर जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और उस का रसूल

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (51)

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो क़रीब है कि अल्लाह फ़तह लाए या अपने पास से कोई हुक्म (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। (52)

और मोमिन कहें गे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की क़स्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ हैं। उन के अ़मल अकारत गए, पस वह नुक़्सान उठाने वाले (हो कर) रह गए। (53)

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जिन्हें वह महबूब रखता है और वह उसे महबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल हैं काफ़िरों पर ज़बरदस्त हैं, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है। (54)

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। (55)

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअ़त ही (सब पर) ग़ालिब होगी। (56)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ

तुम्हारा दीन	जो लोग ठहराते हैं	न बनाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)	जो लोग	ऐ

هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से क़ब्ल	किताब दिए गए	वह लोग-जो	से	और खेल	एक मज़ाक़

وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

57	ईमान वाले	अगर तुम हो	अल्लाह	और डरो	दोस्त	और काफ़िर

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ

यह	और खेल	एक मज़ाक़	वह उसे ठहराते हैं	नमाज़	तरफ़ (लिए)	तुम पुकारते हो	और जब

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ

क्या ज़िद रखते हो	ऐ अहले किताब	आप (स) कह दें	58	अक़्ल नहीं रखते हैं (बेअक़्ल)	लोग	इस लिए कि वह

مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ

उस से क़ब्ल	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	यह कि	मगर	हम से

وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ

उस	से	बद तर	तुम्हें बतलाऊँ	क्या	आप कह दें	59	नाफ़रमान	तुम में अक्सर	और यह कि

مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ

और बना दिया	उस पर	और ग़ज़ब किया	अल्लाह	उस पर लानत की	जो-जिस	अल्लाह	हां	ठिकाना (जज़ा)

مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ

बद तरीन	वही लोग	तागूत	और गुलामी	और ख़िन्ज़ीर (जमा)	बन्दर (जमा)	उन से

مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا

कहते हैं	तुम्हारे पास आएं	और जब	60	रास्ता	सीधा	से	बहुत बहके हुए	दरजे में

اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	उस (कुफ़्र) के साथ	निकले चले गए	और वह	कुफ़्र की हालत में	हालांकि वह दाख़िल हुए (आए)	हम ईमान लाए

اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ

वह भाग दौड़ करते हैं	उन से	बहुत	और तू देखेगा	61	छुपाते	थे	वह जो	खूब जानता है

فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا

जो वह	बुरा है	हराम	और उन का खाना	और ज़ियादती	गुनाह	में

يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ

से	और उल्मा	अल्लाह वाले (दर्वेश)	क्यों उन्हें मना नहीं करते	62	कर रहे हैं

قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	वह कर रहे हैं	जो	बुरा है	हराम	और उन का खाना	उन की बातें गुनाह की

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़्ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिक़ाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से क़ब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हां (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और ख़िन्ज़ीर, और (उन्हों ने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएं तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़्र की हालत में और निकले तो कुफ़्र के साथ, और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उल्मा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا

उस से जो	और उन पर लानत की गई	उन के हाथ	बाँध दिए जाएं	बन्धा हुआ	अल्लाह का हाथ	यहूद	और कहा (कहते हैं)

قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا

وقف لازم

बहुत से	और ज़रूर बढ़ेगी	वह चाहता है	जैसे	वह ख़र्च करता है	कुशादा है	उस (अल्लाह) के हाथ	बल्कि	उन्हों ने कहा

مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ

उन के अन्दर	और हम ने डाल दिया	और कुफ़्र	सरकशी	आप का रब	से	आप की तरफ़	जो नाज़िल किया गया	उन से

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا

आग	भड़काते हैं	जब कभी	क़ियामत का दिन	तक	और बुग़ज़ (बैर)	दुश्मनी

لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	फ़साद करते	ज़मीन (मुल्क) में	और वह दौड़ते हैं	अल्लाह	उसे बुझा देता है	लड़ाई की

لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا

अलबत्ता हम दूर कर देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	अहले किताब	यह कि	और अगर	64	फ़साद करने वाले	पसन्द नहीं करता

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

क़ाइम रखते	वह	और अगर	65	नेमत के बाग़ात	और ज़रूर हम उन्हें दाख़िल करते	उन की बुराइयां	उन से

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ

से	तो वह खाते	उन का रब	से	उन की तरफ़ (उन पर)	नाज़िल किया गया	और जो	और इंजील	तौरात

فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ

और अक्सर	सीधी राह पर (मियाना रो)	एक जमाअ़त	उन से	अपने पाऊँ	नीचे	और से	अपने ऊपर

مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

ع ٩ ١٠ ١٣

तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)	जो नाज़िल किया गया	पहुँचा दो	रसूल (स)	ऐ	66	जो वह करते हैं	बुरा	उन से

مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ

आप (स) को बचाले गा	और अल्लाह	उस का पैग़ाम	आप (स) ने पहुँचाया	तो नहीं	यह न किया	और अगर	तुम्हारा रब	से

مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ

आप कह दें	67	क़ौमे कुफ़्फ़ार	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	लोग	से

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ

और जो	और इंजील	तौरात	तुम क़ाइम करो	जब तक	किसी चीज़ पर (कुछ भी)	तुम नहीं हो	ऐ अहले किताब

اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

आप की तरफ़ (आप पर)	जो नाज़िल किया गया	उन से	अक्सर	और ज़रूर बढ़ जाएगी	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)	नाज़िल किया गया

مِّنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	क़ौमे कुफ़्फ़ार	पर	तो अफ़सोस न करें	और कुफ़्र	सरकशी	आप के रब की तरफ़ से

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बख़ील है), बाँध दिए जाएं उन के हाथ, और जो उन्हों ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह ख़र्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़्र, और हम ने उन के अन्दर क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फ़साद करते हुए दौड़ते हैं (फ़साद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करते। (65)

और अगर वह तौरेत और इंजील क़ाइम रखते और जो उन के रब की तरफ़ से उन पर नाज़िल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअ़त मियाना रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। (66)

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के रब की तरफ़ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैग़ाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, बेशक अल्लाह क़ौमे कुफ़्फ़ार को हिदायत नहीं देता। (67)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) क़ाइम करो तौरात और इंजील और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और ज़रूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़्र उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएं) क़ौमे कुफ़्फ़ार पर। (68)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى

और नसारा	और साबी	यहूदी हुए	और जो लोग	जो लोग ईमान लाए	बेशक

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	अच्छे	और उस ने अ़मल किए	और आख़िरत के दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो

يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	और हम ने भेजे	बनी इस्राईल	पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	बेशक	69	ग़मगीन होंगे

رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

झुटलाया	एक फ़रीक़	उन के दिल	न चाहते थे	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया उन के पास	जब भी	रसूल (जमा)

وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْۤا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ

तो	और बहरे हो गए	सो वह अन्धे हुए	कोई ख़राबी	कि न होगी	और उन्हों ने गुमान किया	70	क़त्ल कर डालते	और एक फ़रीक़

تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देख रहा है	और अल्लाह	उन से	अक्सर	और बहरे होगए	अँधे होगए	फिर	उन की	अल्लाह	तौबा क़ुबूल की

يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ

इब्ने मरयम	मसीह (अ)	वही	अल्लाह	तहक़ीक़	वह जिन्हों ने कहा	बेशक काफ़िर हुए	71	वह करते हैं

وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ

बेशक वह	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	इबादत करो	ऐ बनी इस्राईल	मसीह (अ)	और कहा

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ

दोज़ख़	और उस का ठिकाना	जन्नत	उस पर	अल्लाह ने हराम कर दी	तो तहक़ीक़	अल्लाह का	शरीक ठहराए	जो

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

तीन का	बेशक अल्लाह	वह लोग जिन्हों ने कहा	अलबत्ता काफ़िर हुए	72	मददगार	कोई	ज़ालिमों के लिए	और नहीं

وقف لازم

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	उस से जो	वह बाज़ न आएं	और अगर	वाहिद	माबूद	सिवाए	माबूद	कोई	और नहीं	तीसरा (एक)

لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ

पस वह क्यों तौबा नहीं करते	73	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन से	जिन्हों ने कुफ़्र किया	ज़रूर पहुँचेगा

اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम	मसीह (अ)	नहीं	74	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	और उस से बख़्शिश मांगते	अल्लाह की तरफ़ (आगे)

اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ

खाते थे	वह दोनों	सिद्दीक़ा (सच्ची-वली)	और उस की माँ	रसूल	उस से पहले	गुज़र चुके	रसूल	मगर

الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	औन्धे जा रहे हैं	कहां (कैसे)	देखो	फिर	आयात (दलाइल)	उन के लिए	हम बयान करते हैं	कैसे	देखो	खाना

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और अच्छे अ़मल करे तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (69)

बेशक हम ने बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद लिया और हम ने उन की तरफ़ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुक्म) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फ़रीक़ को झुटलाया और एक फ़रीक़ को क़त्ल कर डाला, (70)

और उन्हों ने गुमान किया कि कोई ख़राबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और बहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

बेशक वह काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा तहक़ीक़ अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहक़ीक़ अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा बेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्हों ने कुफ़्र किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ़ एक रसूल हैं) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिद्दीक़ा (सच्ची - वली) हैं, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ

कह दें	क्या तुम पूजते हो	से	अल्लाह के सिवा	जो नहीं	मालिक	तुम्हारे लिए	नुक़्सान	और न नफ़ा

وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِىْ

और अल्लाह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	76	कह दें	ऐ अहले किताब	ग़ुलू (मुबालिग़ा) न करो	में

دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

अपना दीन	नाहक़	और न	पैरवी करो	ख़ाहिशात	वह लोग	गुमराह हो चुके	इस से क़ब्ल

وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ ع ١٠ ١١ ١٢

और उन्हों ने गुमराह किया	बहुत से	और भटक गए	से	सीधा	रास्ता	77	लानत किए गए (मलऊन हुए)

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	से	बनी इस्राईल	पर	ज़बान	दाऊद (अ)	और ईसा (अ)

ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ

इब्ने मरयम	यह	इस लिए कि	उन्हों ने नाफ़रमानी की	और वह थे	हद से बढ़ते	78	एक दूसरे को न रोकते थे

عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

से	बुरे काम	वह करते थे	अलबत्ता बुरा है	जो वह थे	करते	79

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ

आप (स) देखेंगे	अक्सर	उन से	दोस्ती करते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अलबत्ता बुरा है	जो आगे भेजा

لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِى الْعَذَابِ هُمْ

अपने लिए	उन की जानें	कि	ग़ज़बनाक हुआ अल्लाह	उन पर	और अज़ाब में	वह

خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِىِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ

हमेशा रहने वाले	80	और अगर	वह ईमान लाए	अल्लाह	और रसूल	और जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

उस की तरफ़	न	उन्हें बनाते	दोस्त	और लेकिन	अक्सर	उन से

فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

नाफ़रमान	81	तुम ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा	लोग	दुश्मनी	अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए

الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً

यहूद	और जिन लोगों ने शिर्क किया	और अलबत्ता ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा क़रीब	दोस्ती

لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ

उन के लिए जो	ईमान लाए (मसलमान)	जिन लोगों ने कहा	हम	नसारा	यह	इस लिए कि

مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

उन से	आलिम	और दर्वेश	और यह कि वह	तकब्बुर नहीं करते	82

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुक़्सान का और न नफ़ा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक़ मुबालिग़ा न करो और उन लोगों की ख़ाहिशात की पैरवी न करो जो उस से क़ब्ल गुमराह हो चुके हैं और उन्हों ने बहुत सों को गुमराह किया और (ख़ुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे। (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं। अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा ख़ुद उन्हों ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुस्लमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आ़लिम और दर्वेश हैं, और यह कि वह तकब्बुर नहीं करते। (82)